thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

युग प्रवर्तक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ऋषिवर के विचार

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ को प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह असत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत होता है, इस लिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

मनुष्य का आत्मा सत्यासत को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

यह अंक आर्य वन्दना कोष से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक आर्य समाज सोलन के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६३वां विक्रमी सम्वत् २०७२ सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११६ मई २०१५

thearyasamaj.org

देव तुल्य हैं माता-पिता और आचार्य

माता–पिता, गुरूजनों एवं श्रेष्ठजनों को सर्वदा प्रणाम सम्मान करना चाहिए।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्''

अर्थात् वृद्धजनों तथा माता–पिता, गुरूजनों का सर्वदा अभिवादन प्रणाम तथा उनकी सेवा करने वाले मनुष्य की आयु, विद्या, यश और बल ये चारों बढ़ते हैं। माता–पिता के समान पवित्र इस संसार में दूसरा कोई भी नहीं है। इसलिए लोग इन प्रत्यक्ष देवताओं की अराधना करते हैं। महाभारत में भीष्म पितामह राजा युधिष्ठिर को धर्म का उपदेश देते हुए कहते हैं : हे राजन् ! समस्त धर्मों से उत्तम धर्म माता–पिता और गुरू की भक्ति है। इन तीनों की आज्ञा का कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

माता–पिता अपनी संतान के लिए जो कष्ट सहन करते है उसके बदले पुत्र यदि सौ वर्ष भी माता–पिता की सेवा करे तो भी उऋण नहीं हो सकता। जो उचित अनुचित का विचार छोड़कर पिता के वचनों का पालन करते हैं वे सुख और सुयश को प्राप्त करते हैं।

आज सस्कार हीनता और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होने के कारण वर्तमान पीढ़ी द्वारा माता–पिता एव गुरूजनों की उपेक्षा ही नहीं अपितु उत्पीड़न तक हो रहा है। वृद्ध माता–पिता को बोझ समझकर भगवान भरोसे छोड़ा जा रहा है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती हुई संख्या और मांग इस बात का प्रमाण है कि माता पिता अनावश्यक वस्तु की कोटि मे रखे जाने लगे हैं। वे आज जीवन के अन्तिम पड़ाव में सेवा, सहानुभूति, चिकित्सा और प्रेम के दो मीठे वचनों को सुनने के लिए तरस रहे हैं। जो पुत्र बचपन में माता–पिता को अपने मूत्र से गीले बिस्तर पर सुलाया करता था वही पुत्र अब अपने कटु वचनों से उनके नेत्रों को गीला करने में संकोच नहीं कर रहा है। आज की पीढ़ी यह भूल रही है कि एक दिन उनको भी वृद्धावस्था का दंश झेलना पड़ेगा। तब यदि उनके साथ भी ऐसा ही व्यवहार हुआ तो उन्हें कैसा लगेगा।

हमारी भारतीय संस्कृति का अतीत अति गौरवशाली रहा है। अतः यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए अपने माता–पिता और गुरूजनों के प्रति सदैव सेवा और सम्मान का भाव बनाए रखें।

वृद्ध माता–पिता के पास जीवन के अनुभवों का अपार खजाना होता है। शास्त्र कहते हैं जो सन्तान अपने माता–पिता की सेवा करती है उन्हें किसी तीर्थ आदि करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इन सबका लाभ हमें तभी मिल सकता है जब हम उन्हें प्रसन्न रखें और उनका सम्मान करें। उनके स्वास्थ्य एवं रूचि का ध्यान रखें। उनके पास रोज नहीं तो कभी–कभी चलते फिरते बैठकर सुख–दुःख की चर्चा करें और आवश्यकता अनुसार उनसे परामर्श भी लें। वे इतनी सी सहभागिता दिखाने पर ही प्रसन्न हो जाएंगे। माता–पिता एवं गुरूजनों की प्रसन्नता में ही हमारा कल्याण निहित है। अथर्व वेद में कहा है–अनुव्रत पितुः पुत्रो माता भवतु सम्मनः। अर्थात् : माता–पिता के आज्ञाकारी बनो।

–श्रद्धानंद सदन,
दयानन्द आदर्श विद्यालय, सोलन

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आर्य समाज के महान् स्तम्भ और आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्णधार रहे पूर्व प्रदेशाध्यक्ष श्री सत्य प्रकाश मेंहदीरत्ता के आकस्मिक देहावसान की घटना से मन में अशांति के बादल मंडराने लगे। मैं सोच भी नहीं सकता था कि हिमाचल प्रदेश का आर्य जगत् का यह महान् कर्णधार हमें छोड़ करके सदा और सर्वदा के लिए दिव्य ज्योति में समा जाएगा। श्री सत्य प्रकाश मेंहदीरत्ता जी उन महान् विभूतियों में से एक थे जिन्होंने अपनी पूरी ताकत से इस संस्था के उद्धार के लिए प्रयत्न किया और सभा की दशा को सुधारने के लिए आयु पर्यन्त प्रयत्न करते रहे। मैं उन्हें तबसे जानता था जब वे हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में उच्चाधिकारी के रूप में आसीन थे। शिक्षा मन्त्री महोदय उन पर बहुत विश्वास रखते थे। मैंने अचानक उनसे अपनी बेटी को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (छात्र) में दाखिला दिलाने हेतु निवेदन किया। मेरी आर्थिक स्थिति दयनीय थी और अपनी बेटी को मैं उचित शिक्षा दिलाने हेतु राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्रविष्ठ कराना चाहता था क्योंकि सुन्दरनगर की कन्या उच्च पाठशाला स्तरोन्नत नहीं हुई थी। मैं असमंजस और दुविधा में था। ऐसी स्थिति में मैंने यह समस्या आदरणीय मैंहदहीरत्ता जी के समक्ष रखी। वे शिक्षा मन्त्री जी के निजी सचिव थे। उन्होंने इस सम्बन्ध में मेरा प्रार्थना पत्र लेकर के शिक्षा मन्त्री को अपने आप जाकर के दे दिया और उन्होंने उसी समय दाखिला देने हेतु अनुमति दे दी। ये पहला अवसर था जब सुन्दरनगर की बालिकाओं को बालकों की पाठशाला में १०+१ में बैठने की अनुमति मिली। इसी प्रकार मेरा बालक जो हमीरपुर में इंजीनियरिंग में डिप्लोमा कर रहा था को हमीरपुर में बैठने की अनुमति मिली थी। मैंने उत्साहित होकर श्री सत्य प्रकाश मैंहदरत्ता जी से उसे सुन्दरनगर स्थानान्तरित कराने हेतु अनुरोध किया। इस विषय में शिक्षा मन्त्री तकनीकी ने सुन्दरनगर में दाखिल करने के आदेश प्राप्त कर लिए, जो मेरे लिए एक उपलब्धि के समान थी। एक समय मेरा स्थानान्तरण हिमाचल सरकार द्वारा चम्बा में कर दिया गया। यह उन्हीं के प्रयास थे जिससे मुझे सुन्दरनगर की चाम्बी पाठशाला में ही स्थानान्तरित कर दिया गया, जो एक बडी उपलब्धि थी। श्री सत्य प्रकाश मैंहदीरत्ता जी आर्य समाज के सम्बन्ध में चिंतन करते रहते थे। आज यह उन्हीं की देन रही कि इस प्रदेश में महर्षि दयानन्द चेयर की स्थापना हुई और देश के कोने–कोने से आकर यहां प्रशिक्षु महर्षि दयानन्द की रचनाओं और मान्यताओं पर शोध कर रहे हैं। श्री सत्य प्रकाश मैंहदीरत्ता जी आर्य समाज से सम्बन्धित जिस भी कार्य को अपने हाथ में ले लेते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। उन्होंने अपने मित्रजनों, अधिकारियों का सहयोग लेकर के हिमाचल प्रदेश के शिमला में एक सफल सम्मेलन कराया जिसकी प्रदेश के कोने–कोने में प्रशंसा हुई। वे आर्यजनों के हित चिंतक थे। श्री सत्य प्रकाश मैंहदीरत्ता जी के चल बसने से जो रिक्तता आई है उसे किसी भी दशा में काफी लम्बे समय तक पूरित नहीं किया जा सकता। वे अपनी पत्नी सहित पिंजौर में रहते थे। वे समाज सेवा के कार्यों में सदैव तत्पर रहते थे। वे हिमाचल प्रदेश के आर्य विद्वानों को अपनी ओर से पुरूस्कृत करते रहे हैं। उनकी रचनाओं को प्रकाशित कराने में अपनी ओर से आर्थिक सहयोग देकर पीठ थपथपाते रहे हैं।

आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी में प्रधान पद के चुनाव में मेरे अतिरिक्त उनका नाम भी प्रस्तुत हुआ लेकिन मैंने उनकी महान् सेवाओं के आगे नतमस्तक होकर अपना नाम वापिस ले लिया था। उन्होंने आर्य समाज एवं आर्य जनों के लिए जो कार्य और कुर्बानियां दी हैं उन्हें आर्य जगत् द्वारा भूलने पर भी नहीं भुलाया जा सकता। वे हिमाचल प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा में उच्च स्थान पर आसीन रहेंगे। हम सभी का दायित्व है कि उनके जाने के उपरांत उनकी शिक्षाओं पर आचरण करें और सक्रिय रूप से उन पर चलते रहें। श्री सत्य प्रकाश मैंहदीरत्ता जी अपने आप में एक महान् प्रेरणा स्त्रोत थे। उनकी महान् सेवाओं को कभी नहीं भुलाया जा सकता। वे आर्य जगत् में हमेशा ही उच्च पद पर मरणोपरांत भी आसीन रहेंगे। वे प्रदेश के सभी आर्य समाजों को एकता के सूत्र में बांध कर उन्हें अधिकाधिक मजबूत करना चाहते थे। और उन्होंने अपने जीवन काल में जहां तक सम्भव हो सका आर्य समाज की जड़ों को मजबूत किया। अब उनके चले जाने के बाद हम सभी आर्य जनों का परम धर्म और कर्म बनता है कि हम उनकी शिक्षाओं पर आचरण करें और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने में जीवन की बाजी लगा दें। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में उनका जीवन एक श्रेष्ठ आर्य की तरह रहा है, जिसे गुप्त जी ने इस प्रकार कहा :

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिये जीते ना थे,
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते ना थे।
अपने लिये वे दूसरों का हित कभी हरते न थे,
चिन्ता प्रपूर्ण अशान्ति पूर्वक वे कभी मरते न थे।

श्री मैंहदीरत्ता जी देदीपत्यामान नक्षत्र की तरह चमकते और दमकते रहेंगे। वे सदा और सर्वदा आर्यों के लिए प्रेरणापुंज रहेंगे।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

दो लाल

♦कृष्ण चन्द आर्य

मैं बहुत दिनों से सुन्दरनगर के दो सुप्रसिद्ध विभुतियों के सम्बन्ध में अपनी लेखनी द्वारा विचार अभिव्यक्त करना चाहता था लेकिन आज से पूर्व समय न मिल सकने के कारण अपने विचारों को आज व्यक्त करने जा रहा हूँ। सुन्दरनगर क्षेत्र से सम्बन्धित श्री सोहन लाल गुप्ता तथा श्री श्याम लाल शर्मा दोनों ही अत्यन्त मधुरभाषी, समाज सुधारक और अथक कार्यकर्त्ता रहे हैं। श्री श्याम लाल शर्मा ऐसी विभूति है जिन्होंने सेवानिवृति से पूर्व और बाद भी अपना पलपल सेवा कार्य में अर्पित कर रखा है। कुछ समय पूर्व अचानक ही श्री श्याम लाल शर्मा की दोनों किडनियों ने जबाब दे दिया। वे घर पर ही अपने बेटे और पुत्रवधु से डायलसिस करवाते रहते हैं इस पर ४५,००० रू. प्रतिमास खर्च उठाना पड़ता है। जिसकी पूर्ति सरकारी कर्मचारी को सेवानिवृति के उपरान्त सरकार द्वारा की जाती है। श्री श्यायलाल शर्मा जी बड़ी बहादुरी और साहस के साथ उपरोक्त बीमारी का सामना कर रहे हैं। ऐसी विकट बीमारी से ग्रस्त होने के उपरान्त भी वे अब भी पूर्ववत जुटे रहते हैं उन्हें सेवा भाव के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखाई देता। श्री श्यामलाल जी का यही कथन है कि मेरी एक–एक सांस परोपकार और नेकी के कार्य में व्यतीत हो। दूसरी ओर हमारे परम मित्र सोहन लाल गुप्ता भी सेवानिवृति के उपरान्त मन, वचन और कर्म से व्यतीत करते है। वे अपना अधिकतम समय श्मशान भूमि की देखरेख में लगाते हैं और यह उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम है कि आज इस श्मशान भूमि में ४ से ५ शव जलते देखे गये हैं। एक दिन गुप्ता जी अपने घर वापिस आ रहे थे तो दौड़ते हुए एक बलवान कुत्ते से टकरा जाने से अचानक गिर पड़े थोड़ी देर के उपरान्त अपने मित्र श्याम लाल के घर के पास गिर पड़े। थोड़ी देर के उपरान्त अपने आप को सम्भालते हुए कहने लग अब यह मेरे लिए यमधक्का है अर्थात् यमराज द्वारा मुझे बुलाने का यह निमंत्रण है। मैं श्री सोहन लाल गुप्ता और श्री श्याम लाल शर्मा के विचारों, कार्यों और व्यवहार से अत्यन्त प्रभावित हूँ। यही वे विभूतियाँ है जो अपने कार्यों और विचारों की छाप समाज में छोड़ रही हैं। एक दिन मैंने प्रार्थना के रूप इन दोनों से निवेदन किया कि आप दोनों में से किसी को भी इन्द्र या यम अपने पास बुला कर पंगा नहीं लेना चाहेगा। मेरी समझ में इन्द्र अथवा यम दोनों ही अपनी पदवियों का त्याग इनके लिए करना पसन्द करेंगे। इन्द्र और यम दोनों ही ऐसी पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार महान विभूतियाँ है जो कभी भी और किसी भी परिस्थिति में प्राणी के प्रति अन्याय नहीं करती। तो क्या ये दोनों अपनी पदवी श्याम लाल और सोहन लाल के लिए छोड़ने को तैयार हो सकती हैं ? जो सम्भव प्रतीत नहीं होती। और दूसरी ओर कलियुग के इन दोनों प्राणियों की इतनी सेवाऐं हैं कि यम और इन्द्र जो सर्वश्रेष्ठ हैं तथा यम और इन्द्र को अपने पद छोड़ने के लिए वाध्य कर सकते हैं लेकिन इस विवाद में पड़े बगैर श्याम लाल तथा सोहन लाल को जल्दी में अपने पास बुलाना पसन्द नहीं करेंगे। इससे उनके अपने आसन के छीने जाने का खतरा पैदा होता है। श्री श्याम लाल और सोहन लाल दोनों ही अविरल गति से प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। उनका चिन्तन मनन सर्वश्रेष्ठ है। इसके लिए हम सभी को इन दोनों पर गर्व है।

श्रद्धांजली

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

हिमाचल आर्य जगत्, आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान श्री सत्य प्रकाश मेहन्दरत्ता के निधन का शोक समाचार सुनकर स्तब्ध रह गया। उनके निधन से आर्य जगत् को अभूतपूर्व क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। वह आर्य समाज के महान हितैषी, विचारक, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, कर्मठ कार्यकर्ता तथा योग्य प्रशासक थे। मुझे उनके साथ महामन्त्री के रूप में ४ (चार) वर्ष कार्य करने का अवसर मिला। उनमें अपने सहयोगियों को साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता थी। वह मृदुभाषी तथा उत्तम पथ प्रदर्शक थे। उनके लिये आर्य समाज एक तड़प, एक मकसद, एक लगन और एक मंजिल रहा। आर्य समाजों को गतिशील बनाने के लिये उन्होंने कई पग उठाये। वह अपने साथियों के लिये प्रेरणा थे। हिमाचल विश्व विद्यालय में महर्षि दयानन्द चेयर की स्थापना कराने में उनकी प्रमुख भूमिका रही। दुर्भाग्यवश उनके उत्साह का साथ उनका शरीर न दे सका। साथ घर की परिस्थितियाँ भी ऐसी रहीं कि वह प्रवास के लिये मुश्किल से समय निकाल सके। परन्तु घर पर भी वह चुप न बैठ सके, वह कलम के भी धनी थे। लेखनी के सैनिक के रूप में भी उन्होंने अपना युद्ध जारी रखा। उनके योगदान को आर्य जगत् नहीं भूल सकता। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति दें तथा उनके परिवार के सदस्यों को इस अघात को सहने की शक्ति दे।

thearyasamaj.org

दयानन्द ने गंगा उलट दई

♦इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सैंटर के नज़दीक, यमुनानगर (हरियाणा)

सारा विश्व जानता है कि काशी में काशी नरेश ईश्वर नारायण सिंह की अध्यक्षता में कार्तिक सुदि, द्वादशी, १९२६ वि. के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वामी विशुद्धानन्द, पं. ताराचरण तर्करत्न, पं. बाल शास्त्री, पं. माधवाचार्य व पं राजाराम आदि अनेक पौराणिक पण्डितों से "मूर्तिपूजा" विषयक एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था। इसकी शताब्दी काशी में ही श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी के नेतृत्व में धूमधाम व उत्साह से मनाई गई थी जिसमें मैं भी उपस्थित हुआ था। तब पं. प्रकाशवीर शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के प्रधान थे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक विज्ञापन प्रकाशित करके दूर–दूर तक वितरित कराया गया था। इस शताब्दी के उत्सव पर आर्य समाज के अनेक प्रतिष्ठित शास्त्रार्थ व उपदेशक विराजमान हुए थे, जिनमें सर्वश्री पं. बिहारी लाल शास्त्री, पं. ओम्प्रकाश शास्त्री (खतौली वाले), आचार्य ज्योतिस्वरूप जी, अमर स्वामी जी, आ. प्रज्ञादेवी जी, पं. रुद्रदत्त जी (देहरादून वाले), पं. शिवकुमार शास्त्री, सांसद व पं. प्रकाशवीर शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। जो उपर्युक्त विज्ञापन वितरित किया गया था, उसमें काशी के पौराणिक पण्डितों को सम्बोधित करते हुए लिखा था–"एक सौ वर्ष पूर्व तो यहाँ काशी में तुम्हारे पूर्वज यह न दिखा सके थे कि वेदों में मूर्तिपूजा करने की व्यवस्था कहीं पर उल्लिखित है। अब एक शताब्दी पश्चात् तुममें से किसी ने कोई नई खोज कर ली हो व तुम्हें वेदों में मूर्तिपूजा की व्यवस्था कहीं मिल गई हो तो आओ! हम आर्यजन ४ दिन यहाँ काशी में ही रहेंगे। इस बीच शास्त्रार्थ करने की हम तुम्हें खुली चुनौती देते हैं।"

उत्सव में जो भी विद्वान् वेदी पर विराजमान् थे, वे बारी–बारी अपने भाषण में मूर्ति पूजा का इतिहास, इसके विरोध में तर्क व प्रमाण देकर इसकी निस्सारता व हानियों का सविस्तार वर्णन करते थे। वहाँ आ. प्रज्ञा देवी जी ने पौराणिकों को ललकारते हुए कहा–तुम्हें अपने संस्कृत ज्ञान पर बड़ा झूठा अभिमान है। मैं खुली चुनौती देती हूँ कि आप में कोई पण्डित यदि संस्कृत में भी शास्त्रार्थ करना चाहता हो तो संस्कृत में शास्त्रार्थ करने हेतू मैं तत्पर हूँ। "तत्पश्चात् पं. ओम्प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी का जो प्रवचन हुआ, वह सराहनीय व उल्लेखनीय ही नहीं अद्भुत भी था।"

जब मेरी बारी आई तो मैंने महर्षि द्वारा एक सौ वर्ष पूर्व किये एतिहासिक शास्त्रार्थ की बहुत लम्बी चर्चा की। जब "आप अपना 'मास्टरपीस' गीत सुनाओ"–ये शब्द श्रोताओं की ओर से बार–बार सुनाई देने लगे तो मैंने वेदी पर विराजमान विद्वानों को सम्बोधित करके कहा–"आज पौराणिक शास्त्रार्थ करने आते तो अच्छा था परन्तु वे नहीं आए, न ही आएंगे परन्तु वैदिक धर्म की दुन्दुभि तो आपने भी इस नगरी में फिर सौ वर्ष बाद बजा' ही दी है।" तत्पश्चात् मैंने पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी (=स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज) द्वारा रचित सुप्रसिद्ध गीत 'दुन्दुभि बाज गई' को थोड़ा सा बदलकर सुनाया। मूल गीत के कुछ शब्द इस प्रकार हैं :–

दुन्दुभि बाज गई।
हिमगिरि से गंगा बहती है, सारी दुनियाँ यही कहती है :–
आज किसी ने हरिद्वार में गंगा उलट दई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सम्वत् १९२४ में कुम्भ के मेले में पाखण्ड–खण्डिनी पताका गाड़कर वर्तमान वैदिक मोहन आश्रम की तब खाली पड़ी भूमि पर हरिद्वार में पाखण्ड का खण्डन सत्य का मण्डन डटकर किया गया था। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार जी ने उस सन्दर्भ में यह गीत लिखा था। गंगा हरिद्वार में पीछे हिमगिरि से चली आती है, परन्तु आज उसमें प्रदूषण है। पौराणिक मान्यताओं की गंगा को पीछे वैदिक मान्यताओं के आदि स्त्रोत वेद की होगर मोड़ने का शुभ उद्घाटन महर्षि ने हरिद्वार में ही तब किया था। लगभग अढ़ाई वर्ष पश्चात् महर्षि ने यही कार्य काशी में भी वही गंगा बहती है, जो हरिद्वार में बहती थी। महर्षि ने काशी में सन् १८६६ ई. में गंगा को उलट दिया था। क्योंकि पूर्वोक्त शताब्दी सम्मेलन काशी में आयोजित हो रहा था, अतः मैंने उक्त गीत में कुछ शब्दों का परिवर्तन करके यूँ गा दिया :–

दुन्दुभि बाज गई।
गूँज उठे गिरि कानन सारे पल गति और भई,
चौंक पड़यो दल दम्भराज को सुन ललकार नई।
हिमगिरि से गंगा बहती है, सारी दुनियाँ यही कहती है :–
आज ऋषि ने काशी आकर गंगा उलट दई।

समाचार

♦आर्य समाज सुन्दरनगर, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी का वार्षिक चुनाव १२ अप्रैल २०१५ को आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित कार्यकारिणी का गठन हुआ : प्रधान : प्रोफेसर अर्चना, उप–प्रधान श्रीमती सरला गौड, सचिव श्रीमती रमा शर्मा, उप–मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष श्री श्री वेद प्रकाश। कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती पूजा, श्री दयालु राम शास्त्री, श्री गोपाल शर्मा, श्रीमती सुकर्मा।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

मौन की भाषा

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

मौन आत्मा की भाषा है जिन भावों की अभिव्यक्ति में शब्द कम पड़ जायें, उसकी अभिव्यक्ति मौन द्वारा हो जाती है। दो मित्र बचपन से विद्यार्थी जीवन तक हर पल साथ रहे। उसके बाद ऐसे बिछुड़े कि वर्षों न मिले और न ही सम्पर्क रख सके। एक दिन दोनों अचानक हवाई पट्टी पर मिल गये। एक वायुयान द्वारा आ रहा था और दूसरा जा रहा था। एक दूसरे को देखते ही वह गले लग गये। दोनों इस स्थिति में काफी देर रहे। दोनों की आंखों में आंसु थे। वे इतने भावुक हो गये कि एक शब्द न बोल सके। इतने में वायुयान उड़ान की घोषणा हुई। दोनों अलग हुये और अपने गन्तव्य की ओर चल दिये। परन्तु इतने समय में मौन की भाषा में उन्होंने वह सब कुछ कह दिया जिसकी अभिव्यक्ति शब्दों से नहीं हो सकती थी।

मौन की भाषा में बोल सुनाई नहीं देते, न लिखे जा सकते हैं। अतः यह भाषा शब्द जाल से परे है। इस की अभिव्यक्ति अंग–अंग से प्रकट होती है। मौन आत्मा की भाषा है। यह लेखन विद्या से परे है। इसलिये इसे लिपि की भी आवश्यकता नहीं। यह भाषा की भी अन्तिम सीमा होती है। एक व्यक्ति बुद्ध को गालियाँ देता रहा। बुद्ध ने कोई प्रत्युतर न दिया, केवल मुस्कुराते रहे। बुद्ध के निरन्तर मुस्कुराने ने आग में घी का काम किया। उसने बुद्ध पर थूक दिया। बुद्ध फिर भी मुस्कुराते रहे। उन्होंने ने शिष्यों से केवल इतना ही कहा, "जब शब्दों की कमी हो जाती है, तो यह स्थिति आती है। व्यक्ति अपनी भावनायें इस प्रकार व्यक्त करता है।" परन्तु मौन की भाषा में यह स्थिति कभी नहीं आती।

बौधिक ज्ञान का माध्यम भाषा है। भाषा भौतिक जगत के लिये आवश्यक है और भाषा की मूलभूत दो आवश्यकतायें हैं, १) शब्द संग्रह अर्थात् शब्दकोष २) लिपि। मौन अध्यात्मिक जगत की भाषा हैं, जो दोनों आवश्यकताओं से परे है। इसमें अनुभूति होती है। कला अभिव्यक्ति का अन्य माध्यम है। चित्र कला, नाट्य नृत्य संगीत आदि कला के अंग हैं। लिपि का सर्वप्रथम स्वरूप चित्र लिपि था। अर्थात् लिपि की यात्रा में पहला पड़ाव चित्र लिपि था। परन्तु कला द्वारा अभिव्यक्ति बहुत कठिन तथा अधिक समय लेने वाली होती है। इसलिये भाषा का स्थान कला नहीं ले सकती। भाषा और कला में सक्षम होने के लिये बड़ी साधना की आवश्यकता होती है। परन्तु मौन की भाषा के लिये किसी साधना की आवश्यकता नहीं। इसकी अभिव्यक्ति प्रत्येक अंग करता है। माँ की घुरकी से बच्चा शान्त बैठ जाता है। अध्यापक होठों पर उंगली रखता है और सारी श्रेणी चुप हो जाती है। चेहरे के भाव मन की स्थिति प्रकट करते हैं। मन के अनुकूल होने से चेहरा खिल उठता है और प्रतिकूल होने से चेहरा लटक जाता है। लज्जा आने पर चेहरा लाल हो जाता है। दृष्टि झुक जाती है। दोषी पकड़े जाने पर नजरें चुराता है। आंख से बहते आंसु मन की व्यथा प्रकट कर देते हैं। भृकुटी तन जाये तो समझों कि क्रोध का विस्फोट होने वाला है। मन शान्त हो तो इन्द्रियाँ भी शान्त रहती हैं। मौन एक अनुशासन है जो भीतरी सद्भावना की सुगन्धि विखेरता है। यह सब जीवों की भाषा है जिसका आरम्भ सृष्टि सृजन के साथ हुआ। मौन वाणी का अन्तिम सत्य है जैसे जीवन का अन्तिम सत्य मृत्यु है।

मौन आत्मबल की प्रेरणा है। यह आत्मा की भाषा है। जिन्होंने इसे सुना वह महान बन गये। मौन से सहन शीलता आती है, क्रोध शान्त होता है और शक्ति का संचय होता है। महात्मा गांधी जिस समय जटिल समस्याओं का सामना करते थे, मौन रख लेते थे। मौन आचरण और व्यवहार की भाषा है। जहाँ बोलने में संदेह हो वहाँ मौन श्रेयस्कर होता है। मौन संकट से बचाता है। कम बोलने से व्यक्तित्व निखरता है। ऊर्जा और समय का सदुपयोग होता है। इंद्रियों के संचालन में मौन की बड़ी भूमिका है। यह वाणी का निषेध नहीं। वाणी का उचित प्रयोग भी मौन की भाषा में आता है। कम बोलना मधु की तरह गुणकारी होता है, जिसे अधिक प्रयोग से हानि होती है। चुप रहना एक साधना है। साधना सदा कठिन होती है, परन्तु उसका फल लाभदायक होता है। मौन से एकाग्रता बढ़ती है, ग्राहिया शक्ति तीव्र होती है और मन शान्त होता है। स्वभाव मधुर होता है। स्मृति बढ़ती है और ऊर्जा का ह्रास नहीं होता। वैचारिक द्वेष मौन से शान्त होता है।

अध्यात्मिक शक्ति का विकास मौन से ही सम्भव होता है। यह आन्तरिक शक्ति का स्त्रोत है तथा संदेश है जिसे सुनने से गलतियाँ नहीं होतीं। जिस कार्य के लिये अन्तरात्मा झिझके वह अच्छा हो ही नहीं सकता। मौन से शक्ति ग्रहण कर, ऋषियों ने वेदों की ऋचाओं की व्याख्या की। मौन धर्म का मूल तथा तप का अंग है। साधना की प्रथम सीढ़ी है। इसके बिना साधना अधूरी रहती है। ध्यान साधना का अंग है, एक अन्तर यात्रा है, जिससे मन की मलिनता दूर होती

thearyasamaj.org

है। तामसिक वृतियाँ, सात्विक में परिवर्तित हो जाती हैं। मन का विषय रहित होना ध्यान है और साधना और ध्यान के लिये मौन अति आवश्यक है। मौन जीवन का स्त्रोत है। जब कोई क्रोधित होता है, पहले वह चिल्लाता हैं, फिर मौन हो जाता है। दुःखी होने पर भी व्यक्ति मौन हो जाता है और ज्ञानी होने पर भी मौन हो जाता है। बोध होने पर बुद्ध भी मौन हो गये थे। मौन की भाषा सशक्त होती है। कमज़ोर लोग ही सड़कों पर चिल्लाते हैं। नारे लगाते हैं। मौन व्यक्ति कुछ करके दिखाते हैं। मौन शब्दों का सृजन करता है। उनके थोड़े से कहे शब्द भी प्रभावी होते हैं।

माघ मास की अमावस्या मौनी अमावस्या भी कहलाती है। उस दिन मौन रखने का विधान है। मौन से चित की शुद्धि होती है। इन्द्रियों को संयत रखने का अभ्यास होता है। बेकार की बातों से मौन वृति दूर रहता है। मन शान्त और सबल बनता है। अध्यात्म में मौन का महत्व बड़ा होता है। आत्मा से साक्षात्कार मौन रहकर ही किया जा सकता है। हमें मौन की शक्ति को पहचानना चाहिये। याद रखें संसार के तीन सर्वोत्तम डॉक्टर हैं। भोजन, मौन और प्रसन्नता।

परिवारों का आर्यकरण

♦स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती (वेदभिक्षु) महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली (उ.प्र.)

आज आर्य समाज की दयनीय दशा देखकर कष्ट होता है। जो समाज पाखण्डों को मिटाने और सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार हेतु एक महान क्रांति के रूप में महर्षि दयानन्द ने स्थापित किया था, वह पावन समाज आज स्वयं पाखण्डों के जाल में फंस गया है। अधिकतर वे लोग इस समाज में आ गए हैं जिनको आर्य सिद्धान्तों के अ–ब का भी ज्ञान नहीं है। वे पदलोलुप और अर्थलोलुप तथा समाज की छवि बिगाड़ने हेतु ही आये हैं।

अधिकांश आजकल अवसरवादी आर्यसमाजियों के परिवारों की स्त्रियाँ, पुत्र–पुत्रियाँ कोई भी आर्य समाजों के सत्संगों में नहीं आते हैं। देखा जाता है पति समाज में आता है तो पत्नी पौराणिक मन्दिरों के चक्कर लगाती फिरती है। पुत्र–पुत्रियाँ टी.वी. पर रंगीन चित्र देखने में रत रहते हैं।

वास्तव में हमने महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग का अनुसरण नहीं किया। स्वामी जी ने ३१ दिसम्बर सन् १८८० ई. को आर्य समाज पुलवान के मंत्री मास्टर दयाराम वर्मा को एक पत्र में लिखा था कि जनगणना में धर्म के स्थान पर वैदिक धर्म और जाति की जगह पर आर्य लिखाया जाये। तथा पंजाब में सभी आर्य समाजों में यह सूचना भेजी जाये कि कितने आर्य–समाजी हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द के इस कथन पर ध्यान दिया है। जो आर्य समाजों में उत्सवों के मंचों पर हिन्दू–हिन्दू शब्दों का उच्चारण करते आ रहे हैं।

आर्य समाज की प्रतिनिधि समाजों ने भी इस तरफ ध्यान नहीं दिया है, जबकि इस विषय का पुरजोर प्रचार होना चाहिए था। मात्र ''वैदिक धर्म की जय'' के नारों से क्या काम चलेगा ? जिसका अस्तित्व ही अपनाया नहीं गया है।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि ईसाई, मुसलमान, सिक्ख आदि मतावलम्बियों की सन्तानें वही बनते हैं जो उनके पुरखे होते हैं, परन्तु आर्य समाजियों की संतानें आर्य नहीं बन पाते हैं। इसीलिए आज आर्य समाजों की यह दुर्दशा हो रही है। महर्षि दयानन्द रचित संस्कार विधि के अनुसार संस्कार नहीं होते हैं। आर्यसमाजी–सत्यार्थ प्रकाश आदि महर्षि कृत आर्य ग्रंथों का स्वाध्याय नहीं करते मात्र पदाधिकारी बनकर समाजों में शोर गुल करना ही अपना आर्यत्व समझते हैं।

इनका जाति, बिरादरीवाद भी समाप्त नहीं हुआ है। गुण कर्मानुसार अपने पुत्र–पुत्रियों के विवाह नहीं करते हैं। काश, इन बातों पर ध्यान दिया जाता तो आर्य समाज प्रगतिमान होकर ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' का स्वप्न भी साकार होता और वैदिक धर्म का जय घोष भी सार्थक होता।

जो ऋषि के सच्चे भक्त, श्रद्धालु, सत्य के पक्षधर और अपने को आर्य समझने वाले हैं, वे आर्य और विचार करें। आर्य समाज को पाखण्डों से बचायें।

सभा की अन्तरंग बैठक की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) की कार्यकारिणी एवं अन्तरंग की बैठक दिनांक १० मई २०१५ (रविवार) को प्रातः ११.०० बजे आर्य समाज कण्डाघाट, जिला सोलन में श्री प्रबोध चन्द्र सूद, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) की अध्यक्षता में आयोजित होगी। बैठक में विभिन्न बिन्दुओं पर विचार किया जायगा। अतः आप से अनुरोध है कि बैठक में पधार कर अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।

नोट : स्मरण रहे आर्य समाज कण्डाघाट का वार्षिक उत्सव भी इसी मध्य ६ मई से १२ मई २०१५ तक मनाया जा रहा है। उक्त सूचना श्री रामफल सिंह आर्य जी, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) ने दी।

thearyasamaj.org

आर्य समाज नगरोटा बगवां में आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दो दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न

♦रामफल सिंह आर्य, महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, (हि.प्र.)

आर्य प्रतिनिधि सभा (हि. प्र.) द्वारा आर्य समाजों का दौरा करने के उपरान्त जो जिला स्तर पर सम्मेलनों का कार्यक्रम निश्चित किया गया था, उस क्रम में दिनांक ४ अप्रैल २०१५ एवं ५ अप्रैल २०१५ को आर्य समाज नगरोटा बगवां में कांगड़ा जिले की आर्य समाजों का सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में आर्य समाज नूरपुर, आर्य समाज कोतवाली बाजार धर्मशाला, आर्य समाज सिविल लाईन धर्मशाला, दयानन्द मठ घण्डरा एवं आर्य समाज नगरोटा बगवां के लोगों ने उत्साह एवं हर्षोल्लासपूर्वक भाग लिया। सम्मेलन का प्रारम्भ दिनांक ४ अप्रैल २०१५ को यज्ञ से हुआ। उसके उपरान्त एक विचार गोष्ठी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रबोध चन्द्र सूद जी की अध्यक्षता में शुरू हुई जिसमें दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी को विशेष रूप से मार्गदर्शन हेतु आमन्त्रित किया गया था। गोष्ठी में श्री रामफल सिंह आर्य ने संक्षिप्त उद्बोधन दिया और उसके उपरान्त बड़े विस्तार से चर्चा हुई। जिसमें आर्य समाजों के उत्थान हेतु एवं उनमें गतिशीलता लाने हेतु बहुत से सुझाव दिये गये।

दोपहर के भोजनोपरान्त पुनः गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रश्नोत्तर शैली से कार्य हुआ। बहुत विचार विनिमय के साथ श्री विनय आर्य जी द्वारा सभा को प्रचार का कार्य करने हेतु एक वेद प्रचार वाहन आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश द्वारा उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया जिसका आधा व्यय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आधा आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) द्वारा वहन किया जाऐगा। इस वाहन के माध्यम से एक भजनोपदेशक भी प्रचार हेतु नियुक्त किया जायेगा जिसके एक वर्ष के वेतन का प्रबन्ध भी आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली करेगी। बहुत सी प्रचार सामग्री भी श्री विनय आर्य द्वारा निःशुल्क वितरित की गई।

दिनांक ५–४–२०१५ को प्रातः यज्ञोपरान्त विचार गोष्ठी पुनः प्रारम्भ हुई जिसमें स्वामी संतोषानन्द जी, श्री पं. हरीशचन्द्र जी, श्री सत्यपाल भटनागर उप–प्रधान आर्य प्रति. सभा, श्री डा. मनोहर लाल आर्य (कांगड़ा) आदि ने उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया। अन्त में श्री रामफल सिंह आर्य महामन्त्री ने पूरे सम्मेलन के निष्कर्ष के रूप में बड़ी विस्तृत चर्चा करते हुए आर्य समाजों को दिशा निर्देश दिये जिसे सभी ने अपनाने हेतु अपनी सहमति व्यक्त की। वे बिन्दु निम्न प्रकार से है :–

१. दयानन्द मठ घण्डरा जो कि प्रचार का एक केन्द्र है उसमें एक वर्ष में चार कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे जिनकी सूचना सभी को दी जायेगी। इसमें दयानन्द मठ घण्डरा के वार्षिक उत्सव के अतिरिक्त एक आर्य वीरदल का शिविर जून में, एक साधना एवं स्वाध्याय शिविर अक्तूबर में तथा एक कार्यकर्त्ता शिविर दिसम्बर में लगाया जायेगा।
२. सभी आर्य समाजें अपने यहाँ आर्य वीरदल की शाखा अवश्य स्थापित करें तथा शिविरों का भी आयोजन हो।
३. वार्षिक उत्सवों पर विद्यार्थियों की भाषण प्रतियोगिता आर्य समाज के इतिहास पर/बलिदानियों पर आयोजित की जाये।
४. प्रत्येक आर्य समाज अपना वार्षिक उत्सव उत्साहपूर्वक मनाये।
५. महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर प्रसाद/खीर आदि का वितरण सार्वजनिक स्थानों पर किया जाये।
६. दीपावली पर महर्षि दयानन्द जी का चित्र एवं आर्य समाज का परिचय पत्रक घर–घर पहुँचाने का कार्य किया जाये।
७. सभी आर्य पर्व अवश्य ही मनाये जायें।
८. पुराने आर्य समाजियों के परिवारों से सम्पर्क करके उनके परिवारों को आर्य समाज से जोड़ा जाये।
९. आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली प्रदेश के पास प्रचुर मात्रा में बड़ी उपयोगी सामग्री बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध है जिसे सभी आर्य समाजें अपने यहाँ मंगवा कर रखें और प्रचार हेतु उसका उपयोग करें।

सम्मेलन पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ जिसका श्रेय सभी उपस्थित आर्य समाजों के सदस्यों को जाता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा कांगड़ा जिले की उपरोक्त आर्य समाजों का एवं आर्य समाज नगरोटा बगवां का विशेष रूप से सारा आयोजन करने हेतु धन्यवाद करती है।

thearyasamaj.org

नकली संत

♦विनोद स्वरूप, मुख्य प्रबन्ध सम्पादक

जब से टी.वी. चैनलों की बाढ़ आई है तब से धार्मिक प्रवचनों का भी अंबार लग गया है। प्रवचनकर्त्ता लोगों को अपने आश्रमों में आने का न्यौता देते हैं। अपने अनुयायियों के मन पर अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल देते हैं इसलिए वे पहले के मुकाबले कई सौ गुणा संख्या में आने लगते हैं। भारत के अध्यात्मिक गुरूओं और चमत्कारी बाबाओं की लंबी सूची है। वास्तव में ये संत धर्म–कर्म और परोपकार के नाम पर विशाल औद्योगिक धन्धा चला रहे हैं। राजनीतिक आकाओं के संरक्षण के चलते इनके काले धंधे को कोई रोकता नहीं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात आचार्य रजनीश अथवा ओशो सदा ही विवादों में रहे। विवादित धर्माचार्य चन्द्रास्वामी भारत और विदेशों में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों के साथ अपने सम्बन्धों के चलते काफी चर्चा में रहे। राजनेताओं के आशीर्वाद के चलते चन्द्रास्वामी ने विवादित शस्त्र व्यापारियों को अनेक लाभप्रद ठेके दिलवाए। बाद में विदेशी मुद्रा नियमों के उल्लंघन करने के आरोप में इन्फोर्समेंट डायरैक्टोरेट ने उन पर केस दर्ज किया। लंदन के एक व्यापारी व अन्य लोगों से धोखाधड़ी के आरोप में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। सुदूर दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध तार्थस्थल कांची कामकोटि पीठम् के ६६ वें शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती पर भी हत्या का आरोप लगा था। इस मन्दिर के लिए दान में आया ८३ किलो ग्राम सोना जब अचानक गुम हो गया तो स्वामी जी के लेखाकार ने आरोप लगाया था कि उन्होंने उसकी हत्या करवाने की साजिश तैयार की थी। पुट्टापर्थी के सत्यसाईं बाबा भी एक अन्य भगवान थे जिनके अनुयायी १२६ देशों में फैले हुए हैं। सत्यसाईं बाबा पर बाल यौनाचार के आरोप लगे थे। उन पर यह भी आरोप लगा था कि हवा में हाथ लहरा कर विभूति, सोने के गहने आदि प्रकट करने का उनका चमत्कार केवल हाथ की सफाई मात्र था। धर्मगुरू आशाराम ने पूरे देश को सकते में डाल दिया। उनके अनुयायियों ने मीडिया कर्मियों पर सिर्फ इसलिए हमला किया कि उन्होंने उनके भगवान को बापू लिखने के बजाय केवल आशाराम कहकर क्यों सम्बोधित किया। दिल्ली की 'निर्भया काण्ड' की शर्मनाक घटना के सन्दर्भ में लोग बलात्कारियों को मौत की सजा देने की मांग कर रहे थे तो धर्म के इस ठेकेदार ने कहा था कि वह इस आधार पर आरोपियों को कठोर सजाएं देने के विरूद्ध हैं। जब आशाराम ने यह ब्यान दिया तो कोई नहीं जानता था कि बलात्कारियों के प्रति उनकी यह हमदर्दी उनकी खुद की यौन दुराचारों भरी पृष्ठभूमि में से पैदा हुई है। तब आशा राम ने यह कल्पना भी न की होगी कि वर्ष भर के अन्दर वह भी यौन हमले के आरोप में सलाखों के पीछे होगा। इसके आश्रम से ५ वर्ष पूर्व दो बच्चे गुम हो गए थे, उनके अभिभावकों ने आरोप लगाया था कि काले जादू के लिए उनके अंग निकालने हेतु उनकी हत्या की गई। आश्रम के कर्मचारियों ने इस बात की पुष्टि की कि आशाराम और उनका बेटा काला जादू में संलिप्त हैं। आशा राम को जानने वाले अन्य लोगों का भी कहना है कि वह 'नकली सन्त' और भू माफिया है। उसका असली नाम आशा राम हरपालणी और वह कोयला व्यापारी का बेटा है। देश के अन्य पाखंडी संतों की तरह उसे भी चेलों की कोई कमी नहीं रही। वर्तमान अनुमान के अनुसार उसके दो करोड़ अनुयायी १२ देशों में फैले ४२५ आश्रमों में हैं। उसके अध्यात्मिक कारोबार का आकार १०,००० करोड़ रूपऐ है। देश में कथित दिव्यपुरूषों का धंधा बेशक लम्बे समय से चलता आया है लेकिन वे किसी न किसी विवाद में फंसते रहे हैं। कुछ समय पूर्व स्वामी नित्यानन्द पर भी बलात्कार का आरोप लगा था। भक्तों पर 'कृपा' लुटाने वाले गुरू निर्मल बाबा को मिल रहा दान मुसीबत का सबव बन गया है। बाबा अपने भक्तों की आय का दसवां हिस्सा दान के तौर पर लेते हैं। केंद्रीय उत्पाद शुल्क विभाग ने 'दशांश' वसूले जाने को आधार बनाया है। इस राशि को बाबा की सेवा हासिल करने की 'एन्ट्री फीस' माना गया है। निर्मल बाबा के दरबार की गतिविधियाँ जुलाई, २०१२ के बाद उत्पाद शुल्क विभाग की नज़र में आ गईं थी। जुलाई, २०१२ से अब तक बाबा पर ३.५८ करोड़ रूपऐ का सर्विस टैक्स बकाया है। आज संत वह है जो अशांत हुआ घूम रहा है। ठग संन्यासी हो गया है, समस्त संत–समाज पर यह बात लागू नहीं होती। परन्तु इन छद्मवेशधारी साधुओं के क्रियाकलापों से लोगों के मन में शंका पैदा हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप सच्चे–सुच्चे संतों को भी लोग संदेहास्पद दृष्टि से देखते हैं। रामपाल दास हरियाणा सरकार की सेवा में जूनियर इंजीनियर था, गबन के कारण उसे सरकारी सेवा से निष्कासित कर दिया गया। आज वह इतना बड़ा संत बन बैठा है कि अपने को कबीर का अवतार मानता है। कबीरदासी मठ में रहते हुए वह अपने दुराचार के कारण अपनी मण्डली में निंदा का पात्र बना, इसके एक चेले ने इसकी पोल खोलते हुए एक पुस्तक लिखी 'शैतान बण्यो भगवान' इस पुस्तक से क्रोधित होकर रामपाल ने उसे गुण्डों से पिटवाया। रामपाल ने समाचार पत्र और दूरदर्शन के माध्यम से महर्षि दयानन्द को गालियाँ देना, 'सत्यार्थप्रकाश' के उद्धरणों को गलत

thearyasamaj.org

तरीके से प्रस्तुत करना, समाचार पत्रों में बड़े–बड़े विज्ञापन देकर आर्य समाज और देव दयानन्द की निंदा करने का अभियान जारी रखा। जब मनुष्य का दुर्भाग्य आता है तो दुर्बुद्धि साथ लाता है। रामपाल दास अपने भक्तों को ढ़ाल बनाकर मुकद्दमे की पेशी पर जाने से बचता रहा। उसे गिरफ्तार करने के लिए आश्रम तोड़कर, बिजली, पानी बंद कर आखिर १४ दिन बाद हिरासत में लिया जा सका। सामान्य जनता जब प्रतिष्ठित लोगों को इन ढ़ोंगी सन्तों की पूजा करते देखती है तो भंवरजाल में फंस जाती है। भक्तों के धन से ये संत 'कुबेर' बन जाते हैं। ऐसे में वे अपने को सर्वशक्तिमान समझने लगें तो आश्चर्य की क्या बात है। भक्तिकाल में तो संत की परिभाषा कुछ इस प्रकार थी :–

साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं।
जो धन का भूखा फिरे, सो तो साधु नाहीं।।

'प्रेरणार्थक पत्र'

कहा जाता है कि हर शुभ कार्य के पीछे किसी न किसी की प्रेरणा होती है। मेरे मन में भी दयानन्द आदर्श विद्यालय के इतिहास पर प्रकाश डालने की प्रबल इच्छा जागी। इस नेक कार्य के लिए मुझे प्रेरणा मिली स्वामी सुमेधानन्द जी से जो कि दयानन्द मठ चम्बा के संचालक हैं। उन्होंने मुझे निम्नलिखित पत्र लिखकर प्रेरित किया।

रजि. न. ४६०५

'आर्य जगत्' २०.१२.६६

आदरणीय बहन जी,

सादर नमस्ते ! आपका १३.१२.१६६६ का कृपा पत्र मिला। पत्रिका के लिए अपना संदेश व पासपोर्ट साइज़ का फोटो भेज रहा हूँ।

कृपया विद्यालय के क्रमिक विकास का पूरा विवरण इस पत्रिका में अवश्य दीजिए। किसी संस्था के भूत में जो लोग होते हैं उनके बारे में लोगों को जानकारी होनी चाहिए। कई बाधाएँ आती रहीं किन्तु श्री शशि जी, श्री सिंघा जी छाती तानकर खड़े रहे। उद्यमियों को कोई परास्त नहीं कर सकता। आपने इनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। मुझे आपसे बहुत अपनत्व है। अतः आपके सद्गुणों का प्रशंसक भी हूँ। शशि जी ने बाहर से सम्भाला व आपने अन्दर से, तभी यह सफल हुआ। श्री सिंघा जी जो उन्होंने सगे बड़े भाई की तरह शशि जी का साथ दिया। आप लोगों की यह जोड़ी, यह संगठन और अधिक दृढ़ बने। यही कामना है। मंगल कामनाओं के साथ।

–भवदीय स्वामी सुमेधानन्द,
संचालक दयानन्द मठ, चम्बा

वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रचार आयोजन

आर्य समाज मन्दिर सुन्दरनगर कालौनी में दिनांक ३० अप्रैल २०१५ से ३ मई २०१५ तक आयोजित किया गया।

"न कि देवा इनीमसि नक्या योपयामसि
मन्त्र श्रुत्यञ्चरामसि (साम. १.७६)
"न तो हम किसी की हिंसा करते हैं,
न ही घात–पात करते हैं और न ही फूट डालते हैं
वरन् हम तो मन्त्र को सुनकर तद्नुसार श्रेष्ठ आचरण करते हैं।"

आपको बताते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है कि आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी (हि.प्र) का वार्षिक उत्सव एवं वेद–प्रचार का आयोजन दिनांक ३० अप्रैल २०१५ से ३ मई २०१५ तक बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से किया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं कन्या गुरूकुल फतुही, गंगानगर (राजस्थान) के संचालक स्वामी सुखानन्द जी महाराज एवं सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर जी की भजन मण्डली (हरियाणा) से पधारे थे। सत्य धर्म क्या है, सच्चे ईश्वर की उपासना कैसे हो, हम किस प्रकार सुख एवं शान्ति प्राप्त करें आदि विषयों पर इन विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान सुनाए। इस अध्यात्मिक आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में धर्मप्रेमी आर्यपुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों ने आर्य समाज में पधार कर धर्म लाभ एवं पुण्य प्राप्त कर ज्ञानगंगा में डुबकी लगाई।

''यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्मः'' (यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है) अतः इस अवसर पर विश्वशान्ति के निमित्त विशेष यज्ञ किया गया। इसमें चतुर्वेद शतक के मन्त्रों से आहुतियां दी गई। यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामफल सिंह आर्य (महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) एवं प्रधान आर्य समाज सुन्दरनगर कालौनी) थे। श्री स्वामी सुखानन्द जी एक सिद्धहस्त कुशल वैद्य हैं अतः उपरोक्त तिथियों में निःशुल्क आयुर्वेद चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध करवाई गई। रोगी जनों ने आर्य समाज में आकर चिकित्सा लाभ प्राप्त किया। रविवार, ३ मई २०१५ को यज्ञ एवं पूर्णाहुति तथा भजन एवं प्रवचन का विशेष कार्यक्रम प्रातः ८.०० बजे से आयोजित किया गया।

–प्रधान/मन्त्री एवं
समस्त कार्यकारिणी,
आर्य समाज, सुन्दरनगर, कालौनी

thearyasamaj.org

दयानन्द आदर्श विद्यालय के बढ़ते कदम...

♦कान्ता कश्यप

आर्य समाज सोलन के अधिकारियों ने भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत तथा आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के लिए इस विद्यालय की स्थापना ४ मार्च १९८१ को की। इस विद्यालय की स्थापना श्री कृष्ण सिंह आर्य (प्रिंसीपल डी. ए. वी. कॉलेज चण्डीगढ़) के कर–कमलों द्वारा हुई। तब से लेकर आज तक यह विद्यालय लगातार उन्नति की ओर बढ़ रहा है। सन् १९८१ में इस विद्यालय का कार्यभार श्री रोशनलाल सेठी ने सम्भाला। १९८२–८३ तक श्रीमती स्वर्ण भण्डारी की देख–रेख में कार्यरत रहा। उसी समय श्रीमती उषा मित्तल जी ने १९८१ से १९८३ तक पार्ट टाइम टीचर तथा १९८४ से १९८७ तक प्रिंसीपल के पद पर अवैतनिक रूप से कार्य किया। १९८८ में वेतन सहित प्रिंसीपल का कार्यभार सम्भाला।

१९८९ से १९९६ तक कनिष्ठ विभाग के इंचार्ज के रूप में कार्य किया। १९९० में श्रीमती कुसुम गुप्ता प्रिंसीपल के पद पर कार्यरत हुई। वे राज्य श्रव्यदृश्य शिक्षा अधिकारी के पद से सेवानिवृत हुई थी। इन्हीं के समय विद्यालय १०+२ तक हुआ। तत्पश्चात १९९४–९५ में श्री दिलीप मोदगिल ने प्रिंसीपल का कार्यभार सम्भाला।

स्व. श्री के. एल. शास्त्री जो कि १९९१ में इस विद्यालय में पुरोहित के पद पर नियुक्त किए गए। उन्होंने विद्यालय की पत्रिका 'आदर्श' २०१०–११ में लिखा कि "सन् १९९७ में जब श्रीमती उषा मित्तल जी ने विद्यालय के वरिष्ठ अनुभाग में प्रिंसीपल का कार्यभार सम्भाला।" उस समय विद्यालय का अध्यापक वर्ग सरकार की गलत नीति के कारण असंतुष्ट था। उस समय उन्होंने अपनी सूझ–बूझ का परिचय देते हुए बड़ी कुशलता से विद्यालय का कार्य सुचारू रूप से चलाना आरम्भ किया व विद्यालय की प्रगति के लिए जी–जान से जुट गई जिसके फलस्वरूप विद्यालय उन्नति की ओर बढ़ता गया। आप अनेक विरोधों को सहते हुए सबको एक पटरी पर ले आई।

४ सितम्बर २००१ को दयानन्द आदर्श विद्यालय का वरिष्ठ विभाग सन्नी साइड में बने नए भव्य भवन में हुआ। इससे पहले आपने स्वामी सुमेधानन्द जी की प्रेरणा द्वारा १९९९ में विद्यालय की नई पत्रिका आदर्श का शुभारंभ किया। आर्य समाज व स्कूल के पुराने इतिहास का संकलन करके अपने पूर्वजों के विषय में बताने के लिए प्रयास किया जिन्होंने समाज के लिए बहुत कुछ करने की चेष्टा की। आप सभ्य, शालीन व आकर्षक व्यक्तित्व की धनी हैं।

जब आप विद्यालय में कार्यरत्त दृष्टिगत होती हैं तो ऐसा लगता है कि इस संस्था के लिए दीवानी हैं। विद्यालय के अध्यापक वर्ग जब आपके सम्पर्क में आते हैं तो उन्हें सदा संस्था के प्रति ईमानदारी से परिश्रम करने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग देती हैं।" इसलिए विद्यालय का अध्यापक वर्ग भी आपको पूर्ण सहयोग देने के लिए तत्पर रहता है।

दयानन्द आदर्श विद्यालय ने ४ मार्च २००५ को अपने कार्यकाल के २५ वर्ष पूरे किए। विद्यालय परिवार के लिए यह बड़े गर्व का विषय था कि आर्य समाज के अधिकारियों ने कुछ सुनहरे सपनों द्वारा विद्यालय का नन्हा पौधा रोपित किया था जो वट–वृक्ष का रूप धारण कर चुका था। इसका श्रेय आर्य समाज के अधिकारियों को जाता है जिनमें विशेष रूप से मित्तल परिवार ने तन–मन–धन से इस पौधे को सींचा। श्री शशि–भूषण मित्तल जी ने युवावस्था से लेकर अब तक अवैतनिक रूप से प्रबंधक का कार्यभार तो सम्भाला ही, इसके साथ ही अपनी पत्नी श्रीमती उषा मित्तल जी को छः वर्षों तक अवैतनिक रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जिस युवावस्था में लोग अधिक से अधिक पैसा कमाना चाहते हैं, वह युवावस्था विद्यालय के अर्पण कर दी। इस दम्पत्ति ने विद्यालय का एक नन्हें शिशु के समान पालन–पोषण दिया व इसके उन्नति की ओर बढ़ते कदमों को देखकर अभिभावकों की भांति हर्षित होते रहे।

श्रीमती उषा मित्तल जी के कार्यभार संभालने के पश्चात् विद्यालय उन्नति की ओर बढ़ता ही गया। वरिष्ठ विभाग में नर्सरी के. जी. तथा पहली कक्षा प्रारम्भ की गई, जिसमें यहां के आस–पास के क्षेत्र के लोगों को बहुत लाभ हुआ। समय–समय पर विद्यालय के बाहर खेलों व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। आपकी देखरेख में पर्यावरण क्लब, वालीबाल क्लब, बैडमिंटन क्लब, फुटबाल क्लब का निर्माण हुआ। आपके ही संचालन में हमारे छात्र अन्तर्विद्यालय व आई. सी. एस. ई. नई दिल्ली के राष्ट्रीय स्तर में भी छात्र भाषण प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। विद्यालय में 'मातृ दिवस' का आयोजन तथा मेधावी छात्रों के माता–पिता को पुरूस्कृत करके अभिभावकों से सीधा सम्पर्क स्थापित करने का श्रेय भी आपको ही जाता है।

देवठी में दयानन्द आदर्श विद्यालय की स्थापना बहुत बड़ी उपलब्धि है जिससे देवठी व आस पास के क्षेत्र लाभान्वित हुए। इसके अतिरिक्त विद्यायल में स्मार्ट क्लास व कम्पयूटर क्लास का प्रबन्ध आपके निरीक्षण में हुआ। विद्यालय में सुन्दर, सुव्यवस्थित, सुसज्जित यज्ञशाला का निर्माण हुआ, जिसके लिए आपके परिवार से बहुत बड़ी

thearyasamaj.org

आर्थिक सहायता (५१,००० रूपये) दी गई। इस पुण्य कार्य के लिए आपकी ही प्रेरणा द्वारा अध्यापक वर्ग व आर्य समाज के अधिकारियों से भी आर्थिक सहायता मिली। सन् २०१४ में दयानन्द आदर्श विद्यालय में आई. सी. एस. ई. इन्टर स्कूल साईंस क्विज़ का प्रबन्ध विद्यालय की एक उपलब्धि है। छात्रों की संख्या बढ़ी है।

विद्यालय को उन्नति के इस शिखर तक लाने में आपका सबसे बड़ा हाथ है। आप अनुशासन प्रिया होने के साथ–साथ दयालु तथा कोमल हृदयी हैं, जिसके कारण विद्यालय के छात्र आपको एक ममतामयी माँ के रूप में देखते हैं। विद्यालय परिवार के लिए आप प्रेरणा की स्त्रोत हैं। इस विद्यालय की आप सबसे सशक्त स्तम्भ हैं। विद्यालय को आप कर्मभूमि के रूप में देखती हैं।

विद्यालय के प्रति आपकी कर्त्तव्य निष्ठा को देखकर ऐसा लगता है कि आप केवल विद्यालय के लिए बनी है तथा विद्यालय के छात्रों को आप अपने बच्चों के रूप में देखती हैं। ईश्वर करे आपके मागदर्शन में दयानन्द आदर्श विद्यालय के उन्नति की ओर बढ़ते कदम कभी न रूकें।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त

♦मोहन लाल मगो, पी–६५, पांडव नगर, दिल्ली

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य बड़ा क्यों दिखाई देता है? वैज्ञानिकों के अनुसार उस समय सूर्य की किरणें हल्की होती हैं। उसमें सूर्य पूर्ण रूप से दिखता है। जब सूर्य पूरी तरह उदित हो जाता है तो उसकी किरणों की रोशनी बहुत तेज हो जाती है हमारी आँखें उस पर नहीं ठहरतीं। तब वह छोटा दिखाई देता है क्योंकि हम उसके भीतरी भाग को ही देख पाते हैं।

सूर्य पृथ्वी से १५ करोड़ किलोमीटर दूर है। सूर्य हाइड्रोजन तथा हीलियम से बना है। इसकी अन्दर की सतह बाहरी सतह से अधिक गर्म होती है। सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक आने में आठ मिनट उन्नीस सैकेण्ड का समय लगता है।

शाम के समय प्रकाश के हल्के और कमजोर होने से सूर्य हमें स्पष्ट और पूरा दिखाई देता है परन्तु जब सूर्य दोपहर के समय पृथ्वी के ऊपर होता है उस समय उसकी तेजस्वी किरणें पृथ्वी की ओर आती है। उन तेज किरणों के असर से हमें सूर्य का बाहरी भाग न दिखकर केवल अन्दर का ही भाग दिखाई देता है। इस दौरान सूर्य को देखना आंखों के लिए हानिकारक होता है। इस अवधि में सूर्य के आकार में भी बदलाव दिखता है जो वायुमण्डलीय दबाव के कारण से है।

ऊंचाई घटने पर परिवर्तन में ज्यादा फर्क दिखता है इसलिए ऊर्ध्ववतल छोटा हो जाता है जबकि क्षितिज तल बढ़ जाता है। इसलिए सूर्योदय तथा सूर्यास्त होते समय आकार बड़ा नज़र आता है। बाकी दिन सूर्य का आकार इसके विपरीत होता है।

नन्दा जी सेवानिवृत हुए

♦डॉ. नेहा नन्दा, पी.जी.आई. चण्डीगढ़

श्री योग प्रकाश नन्दा जी ३३ वर्ष का सेवाकाल पूर्ण करने के उपरान्त ३१ मार्च २०१५ को हिमाचल प्रदेश नगर एवं ग्राम योजना विभाग से योजना अधिकारी के पद से सेवानिवृत हो गये। इस अवसर पर नगर योजनाकार, सोलन श्रीमती लीला शयाम जी ने कहा कि श्री नन्दा जी ने अपनी सेवाऐं धर्मशाला, चम्बा, ऊना, परवाणू व नाहन में प्रदान करते हुए सहायक नगर योजनाकार के पद पर रहकर सराहनीय कार्य किया तथा विभाग की बहुत सी विकास योजनाऐं बनाने में अपना योगदान दिया।

सेवानिवृति के अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित (हि.प्र.) राज्य नगर योजनाकार श्री संदीप शर्मा ने कहा–नन्दा जी विभाग के एक योग्य, ईमानदार, मेहनती व कुशल अधिकारी रहे हैं। उनके योगदान पर विभाग को गर्व है, कलियुग में भी अच्छे लोग होते हैं नन्दा जी इसका उदाहरण हैं। इस अवसर पर (हि.प्र.) बिजली बोर्ड के सदस्य सेवानिवृत श्री एस. के. सोनी जी ने कहा कि नन्दा जी की सेवानिवृति से परवाणू को जो क्षति होगी उसकी भरपाई होना कठिन है क्योंकि इनकी कार्यशैली अति उत्तम रही है। विभाग के नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करने की इनमें अभूतपूर्व क्षमता है। पूर्व प्रिंसीपल श्री आर.पी.सरीन जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा– श्री नन्दा जी का सरकारी सेवाकाल बेदाग रहा है। उनकी ईमानदारी इस युग में एक मिसाल रही है। नन्दा जी आर्य समाज से भी जुड़े हैं, मैं आशा करता हूँ कि अब वे आर्य समाज का कार्य पूर्ण रूप से समर्पित होकर आगे बढ़ाऐंगे। परवाणू नगर–कांग्रेस इकाई के प्रधान श्री राजेश शर्मा जी ने नन्दा जी के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि नन्दा जी में अभूतपूर्व कार्यक्षमता है। इन्होंने हमेशा ही आम लोगों का सही मार्गदर्शन किया है। मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। बद्दी बरोटीबाला औद्योगिक क्षेत्र के नगर योजनाकार श्री गणेश जी ने कहा कि श्री नन्दा जी बहुत ही अनुभवी अधिकारी रहे हैं, हमें भविष्य में भी इनका मार्गदर्शन मिलता रहेगा। अपने सरकारी सेवाकाल के दौरान श्री नन्दा जी सामाजिक कार्यो में योगदान देते रहे। लगभग १८ वर्ष तक आर्य समाज हमीरपुर के मन्त्री रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा (हि.प्र.) के उप–मन्त्री और संगठन मन्त्री के पद को भी सुशोभित किया। १९९१ से ९४ तक (हि.प्र.) राज्य विद्युत परिषद जुनियर इंजीनियर संघ के प्रदेशाध्यक्ष के पद पर रहकर संघ को सशक्त किया। हमारी मनोकामना है कि इनका शेष जीवन सुखमय और मंगलमय हो तथा वे सामाजिक कार्यो विशेष कर आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का कार्य अधिक ऊर्जा से निरंतर करते रहेंगे।

thearyasamaj.org

मेरी चिर साध पूरी हुई - आर्य समाज का इतिहास

♦उषा मित्तल, सोलन

मैं १९७३ में अपने विवाह के उपरांत जब से आर्य समाज के सम्पर्क में आई तब से मेरी यह उत्कृष्ट इच्छा रही कि मैं सोलन आर्य समाज तथा दयानन्द आदर्श विद्यालय का इतिहास संकलित करूं क्योंकि आर्य समाज तथा आर्य विद्यालयों ने देश में राष्ट्रीय वातावरण बनाने में सराहनीय योगदान दिया। आर्य संस्थाएं ही ऐसी संस्थाएं हैं जहां ब्रिटिश राज में भी वन्दे मातरम् गाया जाता था। मुझे कौतुहल होता था कि हमारे पूर्वजों ने सोलन जैसे पर्वतीय स्थल पर आर्य समाज की स्थापना की। साथ ही मैं यह चाहती थी कि सोलन में आर्य समाज के संस्थापक तथा इसके इतिहास से भावी पीढ़ी को अवगत करवा सकूं, ताकि वे भविष्य में ऐसे सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरित हो सकें। विशेषकर इस विद्यालय के विद्यार्थी, अध्यापकगण तथा अन्य कर्मचारी उन लोगों के बारे में सोचें तथा एक श्रद्धांजलि देने के लिए प्रेरित हों, जिन्होंने आर्य समाज तथा इस विद्यालय के रूप में एक संस्था खड़ी करके सोलन तथा इसके समीपवर्ती क्षेत्र को अर्पित की और वो भी समाज के लिए। निःस्वार्थ सामाजिक कार्य करें क्योंकि मैं यह समझती हूं कि मनुष्य की वास्तविक उपलब्धियां वहीं है जो समाज के लिए हितकर व कल्याणकारी हों।

इस प्रकार का इतिहास लिखने की प्रेरणा मुझे स्वामी सुमेधानन्द (संस्थापक, दयानन्द मठ, चम्बा) ने भी पत्र द्वारा सन्देश भेजकर दी कि मैं विद्यालय का पूरा विवरण इस पत्रिका में दूं ताकि भूत में जिन लोगों ने इस संस्था के लिए कुछ किया है उन के बारे में लोगों को जानकारी होनी चाहिए। अपनी बढ़ती हुई आयु के साथ मैंने यह भी अनुभव किया कि हमें विद्यालय की स्मृतियां अपने साथ नहीं ले जानी चाहिए।

इस काम में केवल वही लोग मेरी मदद कर सकते थे जिनका इस इतिहास के साथ आरम्भ से सम्बन्ध चला आ रहा था। जब यह विचार मेरे मन में आया तो मेरी स्मृति में दो ही ऐसे व्यक्ति आये जो मेरी मदद कर सकते थे वे थे श्री जगदीश मित्र शर्मा, जो उस समय आर्य समाज के प्रधान थे तथा डॉ. विजय मोहन सिंघा जो आर्य समाज के मन्त्री थे। परन्तु श्री जगदीश मित्र शर्मा जी के निधन के उपरांत डॉ. विजय मोहन सिंघा से मैं उनकी स्मृति में जिन लोगों का सहयोग आर्य समाज को मिला उनके नाम तथा कार्यकाल संग्रह कर पाई क्योंकि लिखित रूप में कुछ भी उपलब्ध नहीं था। मुझे इस काम में श्री शाशि भूषण मित्तल जी ने भी प्रेरित किया क्योंकि वे आर्य समाज तथा विद्यालय की आत्मा को समझते हैं।

वास्तव में पिछलीशताब्दी देश के इतिहास में एक निहायत महत्वपूर्ण शताब्दी है। इस शताब्दी में भारत माता की लगभग एक हजार वर्षों की गुलामी के बाद सोई हुई प्रतिभा ने अंगड़ाई लेकर देखते ही देखते एक प्रबुद्ध जागरण के रूप तक पहुंचने की सभी मंजिले तय की तथा इसी जागरण ने आर्य समाज के झण्डे तले भारत माता के अनन्य सपूत पैदा किये। आर्य समाज की प्रेरणा से आजादी की लड़ाई में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, चन्द्रशेखर आजाद, महात्मा गांधी, सरदार भगत सिंह, भाई परमानन्द इत्यादि अनगिनत पुण्य आत्माओं ने आज़ादी की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

जब आर्य समाज ने उत्तर–पश्चिम में इस जन जागरण का काम किया तो यह बडे सौभाग्य का विषय है कि ऐसे समय में ही सोलन आर्य समाज की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी के दूसरे सुपुत्र श्री इन्द्र विद्या वाचस्पति के कर कमलों द्वारा किराये के दो कमरों में लगभग १९२४–२५ को गंज बाजार, सोलन में हुई। इसके प्रधान श्री घसीटू राम सूद तथा मन्त्री श्री कालू राम अग्रवाल जी (लावो वाले) बनें। उन्होंने यह कार्य १९३३ तक निभाया।

सन् १९२८–२९ के लगभग राय साहेब रोशन लाल, जालन्धर निवासी ने माल रोड, सोलन पर आर्य समाज के लिए जमीन खरीद कर दी जिस पर आज भी आर्य समाज तथा दयानन्द आदर्श विद्यालय का जूनियर विभाग चल रहा है।

ऐसा पता चलता है कि १९२८–२९ के करीब ही आर्य समाज के मुख्य पुराने भवन के निर्माण में डॉ. नानक चन्द वर्मा ने अपनी सेवाएं भी तन–मन–धन से दीं। इसके पश्चात् आर्य समाज को चलाने में मुख्य रूप से वैद्य विद्याधर अलंकार, वैद्य सोमदत्त, वैद्यधर्मदत्त, श्री युगल किशोर गुप्ता जी, श्री लक्ष्मी नारायण सूद, श्री हीरा लाल कौसर, वैद्य वालमुकुन्द बिन्दल जी, श्री कान्ता प्रसाद गुप्ता, उनकी पत्नी श्रीमती उर्मिला गुप्ता, श्री जटाना जी, श्री गंगा नारायण दीवान, वैद्य भीमदत्त, नरेश चन्द्र वर्मा, मास्टर दौलत राम भारद्वाज, श्री जे. पी. चतरथ, डॉ. राम गोपाल सैनी जो हमारे प्रधान भी रहे इत्यादि का सहयोग आर्य समाज की प्रगति के लिए मिलता रहा। पिछले दस्तावेजों से यह भी पता चलता है कि श्री नरेन्द्र नाथ मोहन (एन. एन. मोहन ब्रूरी वाले) सन् १९४७ से सन् १९६९ तक आर्य समाज सोलन के प्रति अपनी सेवायें देते रहे। सन् १९७० में आर्य समाज सोलन के प्रधान श्री जगदीश मित्र शर्मा,

thearyasamaj.org

उप–प्रधान लाला बिशम्भर दास सूद, मन्त्री डॉ. विजय मोहन सिंघा जी बने। श्रीमती वेदमति सूद स्त्री समाज की प्रधान बनी। इस टीम के अन्य मुख्य व्यक्ति थे डॉ. रामगोपाल, श्री जे. पी. चतरथ जी, वैद्य भीमदत्त जी इत्यादि।

दयानन्द आदर्श विद्यालय : आर्य समाज के इन्हीं पदाधिकारियों ने यह स्वप्न देखा कि सोलन में एक ऐसे विद्यालय की स्थापना होनी चाहिए जो भारतीय संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति पर आधारित हो। साथ में आधुनिक विज्ञान तथा टैक्नोलाजी का भी समावेश हो। वे देश के ऐसे देश प्रेमी तैयार कर के देना चाहते थे जो भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत हों तथा आवश्यकता पड़ने पर देश पर प्राणों को न्यौछावर कर सकें।

इसी सभा ने विचार किया कि विद्यालय शुरू करने से पूर्व एक ऐसी स्थाई निधि या आय का प्रबन्ध करना चाहिए ताकि विद्यालय के खर्च के लिए हर वक्त दान या दूसरे के हाथों की ओर न देखना पड़े। आर्य समाज भवन के आगे माल रोड़ पर एक छोटा सा टुकड़ा, पहाड़ी ढ़ांक सा पड़ा था, जिस पर आज नया भवन स्थित है, पर एक व्यवसायिक परिसर बनाने का निर्णय लिया गया। इसकी जिम्मेवारी श्री शशि भूषण मित्तल एक युवा उद्यमी थे, ने सहर्ष स्वीकार की। इस प्रकार भवन का निर्माण आरम्भ हुआ। उस समय आर्य समाज आर्थिक अभाव से ग्रस्त था उनके पास केवल दस हज़ार रूपये की पूंजी पंजाब नैशनल बैंक में पड़ी थी जो इतने बड़े लक्ष्य के लिए अपर्याप्त थी। लेकिन इरादा नेक था इसलिए ईश्वर ने इनको सामाजिक कार्य करने के लिए प्रेरित किया और इन आर्थिक अभावों से जूझने की क्षमता दी। इन्हीं के अनथक प्रयासों से जो छोटा सा बीज बोया गया था वो एक बड़े वृक्ष का आकार ले चुका है।

इस महान कार्य में अनगिनत लोगों का सहयोग रहा, इनमें मुख्य रूप से :

१.	श्री एल. डी. खन्ना तत्कालीन जनरल मैनेजर स्टेट बैंक ऑफ पटियाला	आर्थिक सहायता
२.	श्री मुन्ना लाल बंसल तत्कालीन अधीक्षण अभियंता लोक निर्माण विभाग	स्ट्रक्चरल ड्राईंग व भवन निर्माण
३.	श्री के. सी. गुप्ता तत्कालीन कनिष्ठ अभियंता लोक निर्माण विभाग	निर्माण कार्य
४.	श्री रतन चन्द सूद	निर्माण कार्य

यहां पर मैं कहना चाहूंगी कि मनोहर लाल (पम्मी) मिस्त्री जो एक साधारण परिवार से थे, ने दिन रात भवन निर्माण में हर तरह से योगदान दिया।

जब भी कोई बड़ा कार्य करने लगता है तो बड़ी–बड़ी विकट समस्याएं आती हैं। इस भवन के निर्माण में ऐसी ही समस्याएं चाहे वे प्राकृतिक थीं या तकनीकि या फिर धन अभाव की, इस टीम ने छाती तान कर इसका मुकाबला किया और भगवान ने इस शुभ कार्य को करने के लिए अपना वरदहस्त इन सब पर रखा और यह कार्य पूर्ण हुआ।

यहां मैं उन कुछ दानवीरों से आपको अवगत करवाना अपना कर्तव्य समझती हूं जिन्होंने आर्य समाज को आर्थिक सहायता दी।

१. सन् १९२८–२९ के लगभग जालंधर निवासी राय साहेब रोशन लाल ने आर्य समाज सोलन के लिए जमीन खरीद कर दी।
२. एक पुरानी शिला में लिखे शब्दों से पता चला है कि इन्हीं के सम्बन्धी राय बहादुर सुन्दरलाल, जालन्धर निवासी ने जुलाई १९४० में २०० रूपये दान देकर शौचालय और नल इत्यादि बनबाये।

सन् १९४० से १९६९ तक कई दानवीरों ने दान देकर आर्य समाज के काम को सुचारू रूप से चलाने के लिए दान दिया होगा किन्तु उनके विषय में कोई विवरण न मिल पाने के कारण मैं उनके नाम देने में असमर्थ हूं, जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

लगभग सन् १९७९ में श्री कपिल मोहन जी ने अपने पूज्य पिता श्री नरेन्द्र नाथ मोहन जी की स्मृति में ५०,००० रूपये भवन निर्माण हेतु दिये जिनके नाम से नरेन्द्र मोहन हॉल बनाया गया।

नये भवन के निर्माण के लिए, पुराने भवन के यज्ञशाला वाला हिस्सा तोड़ना पड़ा तो पुरानी यज्ञशाला भी नष्ट हो गई। अतः नई यज्ञशाला की आवश्यकता अनुभव हुई। उसके लिए श्रीमती सवित्री देवी सूद धर्मपत्नी लाला गुरचरण सूद का सहयोग स्मरणीय है। इन्होंने अपने अमेरिका निवासी पुत्र डॉ. राजेन्द्र प्रकाश सूद को प्रेरित किया कि वह अपने ताया स्वर्गीय घसीटू राम की स्मृति में यज्ञशाला बनवायें। उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए उन्होंने सन् १९८१ में इसके लिए धन दिया जिससे आज की भव्य यज्ञशाला का निमार्ण कार्य हुआ।

सन १९८१ में ही विद्यालय के लिए दो कमरे श्रीमती वेदमति सूद की प्रेरणा से श्री झण्डू राम, श्री मेला राम तथा श्री विश्म्भर दास सूद, सोलन निवासी ने अपने पूज्य पिता स्वर्गीय लाला सरनामल सूद जी की पुण्य स्मृति में सरनामल चैरिटी ट्रस्ट द्वारा बनवाये। सन् १९८२ में श्रीमती वेदमति सूद धर्मपत्नी लाला विशम्भर दास सूद ने अपने माता–पिता

thearyasamaj.org

स्वर्गीय श्रीमती एवं श्री नानक चन्द सूद अम्बोटा निवासी की स्मृति में ३००० रूपये देकर भवन निर्माण में सहायता दी। १९८६ में भवन निर्माण हेतु श्रीमती रहंसु देवी चन्देल पत्नी श्री रामजीदास चन्देल सोलन निवासी ने २१००/– रूपये दान देकर सहयोग दिया।

मुझे आज भी श्रीमती सावित्री सूद तथा श्रीमती वेदमति सूद के वे शब्द याद हैं–"वर्षों से हमारी इच्छा थी कि हम आर्य समाज सोलन के लिए कुछ करें, परन्तु दान सही हाथों में जाए तथा उसका सही प्रयोग हो, ऐसा मौका मुझे आज मिला है जब दयानन्द आदर्श विद्यालय तथा आर्य समाज के नए भवन की स्थापना होने जा रही है जिसका उत्तरदायित्व ईमानदार लोगों ने उठाया है।" विशेष रूप से श्री शशि भूषण मित्तल जैसे नौजवान की सेवाओं को उन्होंने सराहा।

सन् १९८० में ट्रांस्पोर्ट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया के चेयरमैन श्री पी. डी. अग्रवाल किसी कार्य हेतु सोलन आये तो हमारी प्रार्थना पर उन्होंने भवन निर्माण के लिए ११००० रूपये दिये। सन् १९८० में श्री शशि भूषण मित्तल जी ने आर्य समाज के भवन निर्माण के लिए ४००० रूपये दान दिया। इसी वर्ष डॉ. विजय मोहन सिंघा जी ने २००० रूपये दिये। सन् १९८१ में श्री जे. पी गुप्ता ने भी २००० रूपये भवन निर्माण के लिए दिये। सन् १९९९ में श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल जी (प्रेसीडेंट, अग्रवाल सभा) ने भवन निर्माण के लिए ५००० रूपये का आर्थिक सहयोग दिया।

किसी भी संस्था को चलाने में बहुत से सहयोगियों की आवश्यकता होती है। यहां पर हम श्री एल. डी. खन्ना, जनरल मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला के सहयोग को कभी नहीं भुला सकते। श्री शशि भूषण मित्तल जी उनके पास पटियाला गये और उन्हें बताया कि हम सोलन में भारतीय संस्कृति पर आधारित एक विद्यालय चलाना चाहते हैं तथा आर्थिक सहायता की प्रार्थना की। उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया तथा पूरा जोर लगाकर इस भवन के लिए बैंक से ऋण की व्यवस्था की। इनके सहयोग के बिना यह महान कार्य सम्भव नहीं था। जब यह भवन बनकर तैयार हुआ तब इसका उद्घाटन श्री एल. डी. खन्ना के कर–कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ तथा इतने भव्य भवन को देखकर आर्य समाज सोलन की कार्यकारिणी, विशेष रूप से श्री शशि भूषण मित्तल जी की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए कहा :

"A dream has come true"

आर्य समाज के वर्तमान मुख्य सदस्य :

श्री जय प्रकाश गुप्ता जी : श्री जगदीश मित्र शर्मा जी के निधन के बाद श्री जय प्रकाश जी 'आर्य समाज, सोलन' के प्रधान बने। उनका जन्म मेरठ के एक सभ्रांत आर्य समाजी वैश्य परिवार में हुआ। आपके पिता श्री दीवान सिंह एक ऐसे महान पुरूष थे जो जीवनपर्यन्त आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़ने के साथ–साथ मेरठ में 'स्वामी दर्शानानन्द' जी के सम्पर्क में रहे। आर्य समाज के प्रभाव से देश की स्वतन्त्रता के लिए भी प्रयत्नशील रहे। उस समय भारत में ब्रिटिश शासन था। उस समय आर्य समाजी होना बड़े खतरे की बात थी। उनकी इस प्रकार की गतिविधियों के कारण उनका स्थानान्तरण बार–बार होता रहा। ऐसे ही संस्कारित परिवार में उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री जय प्रकाश गुप्ता जी का जन्म हुआ। शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे बागवानी विभाग में सरकारी कर्मचारी के रूप में कार्यरत्त हुए। जहां–जहां उनका स्थानान्तरण हुआ, वहां–वहां आर्य समाज की गतिविधियों में अपना योगदान देते रहे। जब उनका स्थानान्तरण राजगढ़ में हुआ, उन्होंने वहां सन् १९५८ में ८० बीघे का एक बगीचा खरीदा। उसकी प्रथम फसल आने पर उन्होंने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया तथा उसमें 'सन्यासी आनन्द भिक्षु' एवं भजनीक इत्यादि को आमन्त्रित किया। कहते हैं कि सन्यासी जी के प्रवचनों से राजगढ़ की जनता गद्गद् हो गई। इसका प्रबन्ध बहन श्री गुप्ता जी ने एकाकी रूप से किया। इसके अतिरिक्त वे 'हिमगिरी कल्याण आश्रम' के प्रधान भी रहे तथा आज भी वे उसके प्रमुख कार्यकर्ताओं में से हैं। वे सन् १९८३ में 'डिप्टी कमीश्नर आफ होर्टिकल्चर' के पद से सेवा निवृत होकर सामाजिक कार्यों में संलग्न हो गये। जो भी उनके सम्पर्क में आता है, वे उनकी अनुशासन प्रियता, सादगी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। मैं भी यही कहना चाहूंगी कि इन पर आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संस्था की भी अमिट छाप रही।

श्री शशि भूषण मित्तल जी : आपका जन्म जालंधर में १२–६–१९४२ में एक आर्य समाजी परिवार में हुआ। आर्य समाजी संस्कार आपको अपने परिवार की विरासत से प्राप्त हुए। आपके दादा लाला भक्त राम जी जालंधर के उन चन्द लोगों में थे जो सबसे पहले स्वामी श्रद्धानन्द और लाला देवराज (संस्थापक, कन्या महाविद्यालय, जालंधर) के साथ ही आर्य समाज में शामिल हुए। आपके पिता लाला अमरनाथ का निधन उस समय हो गया जब आप अल्पायु में ही थे। आप पर आपके ताया लाला जगन्नाथ मित्तल तथा माता श्रीमती शकुन्तला मित्तल के संस्कारों का विशेष प्रभाव पड़ा, जिन्होंने आपको समाज सेवा, देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता के संस्कार बचपन में ही दिये गये। जब आप नौवीं कक्षा के विद्यार्थी थे तब आपने 'हिन्दी रक्षा आन्दोलन' में सक्रिय भाग लिया, जिसके कारण आप इतनी छोटी आयु में जेल गये।

thearyasamaj.org

क्रांतिकारियों से सम्पर्क होने के कारण तथा एक ऐसे सहभोज में शामिल होने के कारण, जिसमें अस्पृश्य कहे जाने वाले लोग भी शामिल थे, आपको तथा आपके परिवार को बहुत वर्षों तक बहिष्कृत रखा। इसके लिए बाद में अग्रवाल सभा के प्रधान ने परिवार से यह कहकर क्षमा याचना की कि आपके देश प्रेम व उद्देश्य को हम समझ नहीं पाये थे। उन्हीं के सुपुत्र लाला जगन्नाथ मित्तल जो श्री शशि भूषण मित्तल जी के ताया थे, को अपने पिता से आर्य समाजी संस्कार मिले। श्री शशि भूषण मित्तल जी के प्रेरणा स्त्रोत उनके ताया जी ही थे।

आप सन् १९७६ में सोलन में आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़ गये। उन दिनों आर्य समाज की गतिविधियाँ कुछ कम हो चुकी थीं। आपके मन में कुछ करने का उत्साह था। श्री जगदीश मित्र शर्मा जी तथा डॉ. विजय मोहन सिंघा जी (मन्त्री आर्य समाज) ने आपको प्रेरित किया। सोलन में 'दयानन्द आर्य विद्यालय' की स्थापना का विचार आप ही ने सन् १९७९ में प्रस्तुत किया। देखते ही देखते आपके प्रयत्नों तथा सहयोगियों के सहयोग द्वारा मालरोड़, सोलन पर आर्य समाज के भव्य भवन का निर्माण हुआ। आपके कार्यकाल के आरम्भ में लोगों ने आप पर इल्जाम लगाये कि आप सर्वे–सर्वा बनना चाहते हैं यह सब कुछ सहते हुए भी आप दृढ़ निश्चय, लग्न, ईमानदारी के साथ अपने कार्य में लगे रहे। आज वही लोग जो आप की आलोचना करते थे, अब आपके कार्यों की सराहना करते हैं। श्री शशि भूषण मित्तल जी पर भी आर्य समाज के साथ–साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्कारों की भी अमिट छाप देखने को मिलती है।

डॉ. विजय मोहन सिंघा : डॉ विजय मोहन सिंघा का जन्म सोलन में २१–११–१९२४ में हुआ। आप पर अपने ताया महाशय परमानन्द जी तथा पिता श्री तिलक राम जी के आर्य समाजी संस्कारों का प्रभाव पड़ा। इसके साथ ही आप 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक' के संस्कारों से ओत–प्रोत रहे। आपके विचारों पर आपके ताया महाशय परमानन्द जी का विशेष प्रभाव पड़ा जो शहादरा दिल्ली आर्य समाज के प्रधान तथा मन्त्री जीवन पर्यन्त रहे। आप 'स्वामी सत्यानन्द' जी के शिष्य रहे। आपके पिता तथा ताया महाशय ध्वजानन्द जी के शुद्धि आन्दोलनों में लगातार भाग लेते रहे। इन्हीं संस्कारों में डॉ. सिंघा का पालन–पोषण हुआ और उन पर इन संस्कारों की अमिट छाप पड़ी।

उनके पिता पारम्परिक रूप से एक व्यवसायी थे। एक बार दीपावली के दिनों में एक अस्पृश्य कहे जाने वाले नवयुवक द्वारा मिठाई के पैकेट बनवाने के परिणामस्वरूप इन्हें जेल जाना पड़ा तथा व्यवसायिक संस्थान पर तीन दिन के लिए ताला बन्दी कर दी गई। यह अस्पृश्य कहाने वाला युवक सामाजिक प्रताड़ना न सह पाया और उसने दिल्ली जाकर अपना धर्म परिवर्तन करने का निश्चय किया। इस बात की सूचना आपने अपने ताया महाशय परमानन्द जी को दी। परिणाम स्वरूप आपके ताया जी ने उस युवक को धर्म परिवर्तन करने से बचा लिया। डॉ. विजय मोहन सिंघा सन् १९३३ से ही आर्य समाज की गतिविधियों से जुड़ गये। १९४७ में दिल्ली में दिवान हॉल आर्य समाज के सदस्य बने। आप १९६० में दिल्ली से सोलन लौटे तथा अपना अभ्यास आरम्भ किया। आर्य समाज की गतिविधियों में अपना योगदान देना आरम्भ किया। सन् १९७० में आप आर्य समाज के मन्त्री बने और आज तक इसी पद पर कार्यरत्त हैं। आप अपनी सेवाएं आर्य समाज के प्रति अर्पित कर रहे हैं। मैंने सुना है कि जब आर्य समाज की गतिविधियां कम होने लगीं तब भी डॉ. सिंघा जी ने हिम्मत नहीं हारी और अकेले ही आर्य समाज का दरवाज़ा खोलकर हवन की परिपाटी को चलाते रहे। करूणा, संवेदना तथा सादगी उनके गुण हैं। इन्हीं गुणों के कारण वे लगातार कई वर्षों से सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए हैं। डॉ सिंघा में एक विलक्षण गुण है कि शारीरिक रूप से परिपूर्ण न होने पर भी आप में इतनी हिम्मत और उत्साह है कि आप से मिलने वाला प्रेरित हुए बिना नहीं रह पाता। आपका सत्य के प्रति बहुत आग्रह है। जिस बात को आप सत्य मानते हैं, निर्भयता से कह देते हैं। जब भी आर्य समाज और दयानन्द आदर्श विद्यालय पर कोई विपत्ति आई तो आप छाती तानकर बराबर खड़े रहे तथा अपने सहयोगियों को यह कहकर प्रेरणा देते रहे कि हम सब यह निःस्वार्थ सेवा कर रहे हैं, विपत्तियां तो आती रहेंगी, आलोचना भी होगी, परन्तु हमें अपने धैर्य व निष्ठा को न छोड़कर हिम्मत बनाए रखना चाहिए।

संघ समाचार

२६ फरवरी २०१५ को मंगत राम चौधरी की अध्यक्षता में बल्ह खंड़ की कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुई जिस में निम्न प्रस्ताव पारित किये :

१. पैंशनरों को ६५, ७० और ७५ वर्ष की आयु पार होने पर ५, १० और १५ प्रतिशत भत्ते को मूल वेतन में शामिल किया जाए।
२. चिकित्सा भत्ता ३५० रूपये के स्थान पर ५०० रूपये प्रतिमाह पंजाब तर्ज पर किया जाए।
३. एल. टी. सी. की सुविधा हर दो वर्ष के बाद तथा करूणामूलक आधार पर पैंशनरों के आश्रितों को नौकरी दी जाए।

–कृष्ण चन्द आर्य

thearyasamaj.org

अति सर्वत्र वर्जयेत् !

•महात्मा आनन्द स्वामी

'यह अति न करो। मर्यादा के अन्दर रहो। सीमा के अन्दर रहो।' संसार में जहाँ–जहाँ मर्यादा टूटती है, वहाँ–वहाँ तबाही और विनाश जागते हैं। जिस देश में मर्यादा न रहे, वह देश नष्ट हो जाता है। जिस समाज में मर्यादा न रहे वह समाज समाप्त हो जाता है। और यह मर्यादा क्या है ?

एक नौजवान लड़का है, एक नौजवान लड़की। दोनों एक–दूसरे को चाहते हैं। लड़के के माता–पिता लड़की के माता–पिता से मिलते हैं, लड़की के माता–पिता लड़के के माता–पिता से। सब कुछ देखकर दोनों की सगाई कर देते हैं। विवाह का दिन निश्चित होता है। बैण्ड और बाजे बजते हैं। सजे हुए बाराती आते हैं। फूलों की मालाएँ पहने हुए दूल्हा आता है। लड़की के पिता के घर में पहुँचते हैं सब लोग। लड़की पुष्पमाला से लड़के का स्वागत करती है। सुन्दर वेदी सजाई जाती है। पवित्र मन्त्रों से विवाह–संस्कार कराया जाता है। दूसरे दिन मोटर या डोली में बैठकर लड़का और लड़की दोनों घर चले जाते हैं। सब ओर से बधाईयाँ मिलती हैं। सब ओर से आशीर्वाद मिलते हैं। सुख का संसार बस जाता है। यह है मर्यादा।

परन्तु यही लड़का और लड़की यदि मर्यादा को भूलकर घर से भाग निकलें, दिल्ली के रेलवे–स्टेशन से गाड़ी में बैठकर मेरठ की ओर चल दें, तो शोर–गुल मच जाता है। पुलिस दौड़ती है। उन्हें पकड़ लेती है। हवालात में बन्द कर देती है। मुकद्दमा चलता है। मान मिट्टी में मिल जाता है। सुख नष्ट हो जाता है। दुःख जाग उठता है। अब बातें तो दोनों एक ही हैं। एक लड़का लड़की को ले गया या लड़की लड़के को ले गई। परन्तु पहली दशा में मर्यादा तोड़ी गई इसलिए दुःख होता है।

इस मर्यादा को बतानेवाली, स्थिर रखनेवाली मेधा बुद्धि है; मर्यादा न रहे तो देश नहीं रहता, समाज समाज नहीं रहता, मानव मानव नहीं रहता। सब नष्ट हो जाते हैं। विनाश की ओर भागते हैं। इसलिए इस मन्त्र में मेधा को मांगने के लिए कहा गया है, जिससे मांगनेवाले का जीवन कल्याण से पूर्ण हो। अपना कल्याण करने वाला हो, दूसरों का कल्याण करने वाला हो। प्रतिदिन तो हम मांगते हैं :–

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।।

चमकता सितारा

(स्व. उदय मित्तल को श्रद्धांजली)

२५ फरवरी का शुभ दिन था,
बालक को जननी ने जन्म दिया था।
जो था पिता की आंखों का तारा,
सबका दुलारा, सबका प्यारा,
आर्य समाजी परिवार में पला,
देश की सेवा भाव हृदय में जगा
कक्षा में अव्वल आना ही
उसका रहा सपना
जिसे उसने बनाया अपना
+२ में चमकाया उसने नाम
विद्यालय का जन्मदाता, जन्मदातृ का
संस्कारित परिवार में पला,
क्यों न रहता, संस्कारों से ढला
ये तो थी पारिवारिक परम्परा
इससे रहा वह ओत–प्रोत सदा
ईमानदार व दयालु था उसका जीवन
जो न देख पाता था किसी को निढाल
उनको इस दशा से हो जाता था बेहाल
न्यौछावर कर देता था समय व केतन
करता था सबकी सेवा देकर तन–मन व धन
इसी अच्छाई से जाना, कितना प्यारा रहा सबने माना,
ऐसा रहा उदय, जो सदा रहा उदय
अपनी वाणी, अपने कर्म से समाज के लिए तथा
अपने माता–पिता के लिए
उदय सदा था, सदा रहेगा उदय।

–विवेकानन्द सदन, डी.ए.वी. सोलन

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को–आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

विद्यार्थियों को प्रतिभावान कैसे बनाया जाये ?

•राजकुमार जैन, कुल्लू (हि. प्र.)

भोजन में परिवर्तन द्वारा विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का निखार कर सकते है जो विद्यार्थी प्रातःकाल खाली पेट पढ़ते हैं उनको पढ़ा हुआ जल्दी याद हो जाता है। अतः नाश्ते का त्याग विद्यार्थियों के लिए यादास्त बढ़ाने में तथा पढ़े हुए को जल्द याद करने में सहायक है।

सफलतापूर्वक इस प्रकार के प्रयोग प्राईमरी कक्षा से लेकर स्नात्कोत्तर विद्यार्थियों पर किये गए हैं।

प्रातः काल नाश्ते के स्थान पर ताजा फलों का जूस, सूप तथा हरी पत्तियों का जूस उपयोगी है। दोपहर में हल्का भोजन साथ में अंकुरित एवं अपक्वाहार फल सब्जी लेकर रात्री में ही पूरा भोजन लेने से बौद्धिक विकास तेजी से होगा।

सुख देने से सुख लौट कर आता है :

अपने से कमजोर व छोटी कक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाई में सहायता करें। अपनी पॉकेट मनी का दशांश भगवान सेवा में लगाएं। खाने से पहले खिलाना पहनने से पहले पहनाना अर्थात् भोजन व वस्त्रों से भी सेवा करनी चाहिए।

ध्यान लगाना :

शांत जगह पर, आसन लेकर रीढ़ की हड्डी को सीधी करके १०–२०मिनट प्रतिदिन ध्यान में बैठना। आसान तरीका है, ना उस समय कुछ करें न करने की सोचें। ऐसा करने से स्मरण शक्ति बढ़ेगी, तनाव समाप्त होंगे। प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि इससे विद्यार्थी की रिकॉलिंग क्षमता तेजी से बढ़ती है।

अधिक जानकारी के लिए Website देखें WWW.lass.info.

माता–पिता के कर्त्तव्य :

जो माता–पिता अपने बच्चों को पढ़ाई में अच्छा बनाना चाहते हैं वे दूसरे के बच्चों को पढ़ाई में हर सम्भव सहयोग करें कहावत है, 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

स्वर्गीय श्रीमती दमयन्ती दत्ता जी का उनके परिजनों के साथ छाया चित्र।